7

यीशु की परीक्षाएं

(4:1-11)

यीशु के ईश्वरीय पुत्र होने की परमेश्वर की घोषणा के बाद (3:17), मसीह को परीक्षा किए जाने के लिए जंगल में ले जाया गया। आम तौर पर परीक्षा आत्मिक रूप में उच्च बिन्दु के बाद तुरन्त होती है।[1] जंगल में यह परीक्षा अपनी सेवकाई आरम्भ करते हुए यीशु के स्वभाव को साबित करने के लिए होनी थी। विवरण में इस प्रश्न का उत्तर मिलता है कि ''परमेश्वर का पुत्र होने का क्या अर्थ है?'' सचमुच में पुत्र होने के लिए यीशु के लिए सब बातों में अपने आपको परमेश्वर के सुपुर्द करते हुए उसका वफ़ादार होना आवश्यक था, चाहे इसके लिए उसे कुछ भी कीमत देनी पड़ती। इब्रानियों के लेखक ने कहा है, ''पुत्र होने पर भी उसने दुख उठा-उठा कर आज्ञा माननी सीखी'' (इब्रानियों 5:8)।

यीशु की परीक्षाओं की कहानी में मूसा के इस्राएलियों को मिस्र में से प्रतिज्ञा किए हुए देश में ले जाने की कहानी की कई समानताएं हैं। दोनों को जंगल में ले जाया गया (4:1; निर्गमन 19:1, 2), दोनों ने चालीस दिन और चालीस रात उपवास रखा (4:2; निर्गमन 34:28; व्यवस्थाविवरण 9:9), और दोनों को ऊंचे पहाड़ से राज्य दिखाए गए (4:8; व्यवस्थाविवरण 3:27; 34:1-4)।[2] तौभी यीशु और इस्राएल जाति के बीच एक बड़ा सम्बन्ध बनाया जाता है जो जंगल में चालीस साल तक स्थिर रहे। डग्लस आर. ए. हेयर ने यीशु की और इस्राएलियों की परीक्षा के बीच एक सम्बन्ध देखा:

> मत्ती के क्रम में तीनों परीक्षाएं इस्राएलियों द्वारा सामना की गई तीन परीक्षाओं के कालक्रम को दर्शाती हैं। इस्राएल को जहां परमेश्वर द्वारा ''पुत्र'' कहा गया था (होशे 11:1; देखें व्यवस्थाविवरण 8:5), वे सब परीक्षाओं में असफल रहे, वहीं यीशु ने पक्के विश्वास के साथ परीक्षाओं का जवाब देते हुए परमेश्वर का पुत्र होने के अपने योग्य होने को दिखाया।[3]

आर. टी. फ्रांस ने आगे कहा, ''असली इस्राएल के रूप में यीशु की अवधारणा को मत्ती ने 2:15 में पहले ही पक्का कर दिया था, यहां वह पूरी अभिव्यक्ति तक पहुंचता है'' इन परीक्षाओं में।[4]

परिचय (4:1, 2)

[1]तब उस समय आत्मा यीशु को जंगल में ले गया कि इब्लीस से उसकी परीक्षा हो। [2]चालीस दिन और चालीस रात उपवास रखने के बाद उसे भूख लगी।

आयत 1. अपने बपतिस्मे के आस पास होने वाली घटनाओं के बाद (3:13-17), **आत्मा**

यीशु को जंगल में ले गया, जहां उसने परीक्षा की परेशानी सही। मरकुस ने लिखा, ''आत्मा ने तुरन्त उसको जंगल की ओर भेजा'' (मरकुस 1:12)। लूका ने कहा कि यीशु ''आत्मा के सिखाने से जंगल में फिरता रहा'' (लूका 4:1)।

मत्ती के विवरण में क्रिया शब्द ''ले गया'' संकेत देता है कि यीशु ने जंगल में ऊंचाई पर जाने के लिए यरदन की तराई को छोड़ दिया। हमें यह तो पता नहीं है कि जंगल में सही सही वह स्थान कौन सा था, परन्तु परम्परा के अनुसार यह स्थान यरीहो और यरूशलेम के पहाड़ी क्षेत्र में कहीं है। पहाड़ का नाम आम तौर पर चालीसा पहाड़ (''चालीस'') बताया जाता है। स्थानीय रूप में ''परीक्षा का पहाड़'' के रूप में प्रसिद्ध यह स्थान यरीहो से डेढ़ मील पश्चिम की ओर था।[5]

पवित्र आत्मा यीशु को जंगल में ले गया ताकि दुष्ट द्वारा उसकी **परीक्षा** हो। संदर्भ पर निर्भर होते हुए यूनानी क्रिया में या तो ''टेस्ट, परीक्षा'' या ''प्रलोभन, लालच'' का सुझाव दे सकता है।[6] शैतान यहां पर परख करने वाला था और यह संकेत है कि यीशु पर बुराई करने का प्रलोभन दिया जा रहा था।[7] परमेश्वर लोगों को परखता है पर वह उन्हें बुराई करने के लिए प्रलोभन नहीं देता (याकूब 1:13)। वह लोगों को प्रलोभन में डालने की शैतान को अनुमति देता है पर वह हमेशा निकल जाने का रास्ता भी देता है (1 कुरिन्थियों 10:13)।

यीशु का प्रलोभन परमेश्वर की इच्छा के अनुसार था। शैतान के साथ यह सामना संयोग से हुई मुलाकात नहीं थी, बल्कि इसकी योजना बनाई गई थी और इसे तैयार किया गया था। शैतान को मालूम था कि यीशु उसे कहां मिलेगा, और किसी न किसी प्रकार यीशु को मालूम था कि शैतान उसके पास आएगा। यीशु के लिए उस काम के लिए जिसे करने के लिए परमेश्वर ने उसे चुना था परखे जाना आवश्यक था ''ताकि वह प्रमाणित हो सके और वह परखा जाए''[8] (देखें इब्रानियों 4:15)।

परीक्षा लेने वाले को **इबलीस या शैतान** (*diabolos*) कहा गया है जिसका अर्थ है ''निन्दक'' या ''आरोप लगाने वाला।'' 4:10 में यीशु ने उसे ''शैतान'' कहा; और अय्यूब 1:6-11 में ''विरोधी'' या ''शैतान'' अय्यूब के विरुद्ध आरोप लगाने वाले को कहा गया। यूहन्ना ने कहा कि वह ''हमारे भाइयों पर दोष लगाने वाला, रात दिन हमारे परमेश्वर के सामने उन पर दोष लगाता'' था (प्रकाशितवाक्य 12:10)। वह बालज़बूल (या बालज़बूब) अर्थात दुष्टात्माओं का सरदार है (मत्ती 12:24; मरकुस 3:22)। उसे सर्प या सांप (उत्पत्ति 3:1-5; 2 कुरिन्थियों 11:3; प्रकाशिवाक्य 20:2), ''गरजने वाला सिंह'' (1 पतरस 5:8) और ''एक बड़ा लाल अजगर'' (प्रकाशितवाक्य 12:3) के रूप में दिखाया गया है। बाइबल सावधान करती है कि वह अपने आपको ''ज्योतिर्मय स्वर्गदूत'' के रूप में भी दिखाता है (2 कुरिन्थियों 11:14)। यीशु ने शैतान को ''संसार का सरदार'' (यूहन्ना 16:11) कहा। पौलुस ने उसे ''इस संसार का ईश्वर'' (2 कुरिन्थियों 4:4) और ''आकाश के अधिकार का हाकिम'' (इफिसियों 2:2) कहा।

आयत 2. परीक्षा लेने वाले के साथ अपनी मुलाकात की तैयार में यीशु **चालीस दिन और चालीस रात निराहार रहा।** लूका ने इसे अधिक आसान शब्दों में कहा: ''उन दिनों में उसने कुछ न खाया'' (लूका 4:2)। उपवास का यह समय पुराने नियम में इस्राएल के महान अगुओं के उपवास से मिलता जुलता है। मूसा ने व्यवस्था लिए जाने से पहले सीनै पहाड़ पर चालीस दिन

और चालीस रात उपवास किया था (निर्गमन 34:28; व्यवस्थाविवरण 9:9; 10:10)। एलिय्याह ने करमेल पहाड़ पर बाल के नबियों को पराजित करने के बाद ईजेबेल के क्रोध से भागते समय इतने ही समय के लिए उपवास रखा (1 राजाओं 19:8)। इनमें से प्रत्येक मामले में उपवास आत्मिक कारण के लिए रखा गया था। इसी कारण से यीशु ने अपनी आने वाली सेवकाई और परीक्षा लेने वाले के साथ अपना सामना होने की तैयारी में ध्यान लगाते हुए उपवास किया।

यीशु के उपवास का परिणाम यह हुआ कि **तब उसे भूख लगी।** भूख व्यक्ति को शारीरिक रूप में निर्बल बना देती है और यह उसे आत्मिक आवश्यकताओं सहित अन्य चिन्ताओं को नज़रअन्दाज़ करके भोजन पर ध्यान लगाने का कारण भी बनती है।[9] न केवल यीशु भूख से बेहाल था बल्कि वह जंगल के खतरों में भी घिरा हुआ था। मरकुस ने यीशु के ''वन पशुओं के साथ'' होने का विवरण दिया (मरकुस 1:13)।

पहली परीक्षा (4:3, 4)

[3]तब परखने वाले ने पास आकर उस से कहा, यदि तू परमेश्वर का पुत्र है तो कह दे कि ये पत्थर रोटियां बन जाएं। [4]उस ने उत्तर दिया,''लिखा है कि 'मनुष्य केवल रोटी ही से नहीं, परन्तु हर एक वचन से जो परमेश्वर के मुख से निकलता है जीवित रहेगा।'''

आयत 3. यीशु जब निर्बल और भूखा था तभी शैतान ने आकर उसका सामना किया। मत्ती ने यह सुझाव देते हुए कि उसका इरादा अपने शिकारों को बुराई करने के लिए मनाना था, उसे **परखने वाले** के रूप में दिखाया है (देखें 1 कुरिन्थियों 7:5; 10:13; 1 थिस्सलुनीकियों 3:5)। इस विशेष अवसर पर शैतान ने यदि कोई शारीरिक रूप लिया तो वचन में इसका कोई संकेत नहीं दिया गया।

शैतान ने परमेश्वर के यीशु की प्रशंसा में कहे गए शब्दों को घुमाते हुए उसे ताना मारा (देखें 3:17)। उसने कहा, ''**यदि तू परमेश्वर का पुत्र है ...।**'' परखने वाले ने यीशु के दावे पर ही प्रहार किया। यूनानी संरचना शैतान की बात का अर्थ ''क्योंकि तू परमेश्वर का पुत्र है, तो दिखा तू क्या कर सकता है'' की अनुमति देती है।

शैतान यीशु के पास तब आया जब वह शारीरिक रूप में निर्बल था (4:2)। वह लोगों पर तभी आक्रमण करने की तलाश में रहता है जब वे अपने सबसे कमज़ोर क्षणों में होते हैं। यीशु की अत्यधिक भूख पर ही बात करते हुए उसने कहा, ''**तो कह दे कि यह पत्थर रोटियां बन जाएं।**'' जंगल में पत्थरों की भरमार थी (देखें 3:9), और उनमें से कुछ पत्थर यीशु द्वारा खाई जाने वाली परम्परागत रोटी के आकार के होंगे (देखें 7:9)। यीशु के लिए पत्थरों को रोटियां बनाना आसान होना था। बाद में उसने पानी को दाखरस में बदल दिया और कुछ मछलियों और रोटी के कुछ टुकड़ों के साथ बड़ी भीड़ को भरपेट खिलाया (यूहन्ना 2:6-11; मत्ती 14:13-21; 15:32-38)। शैतान चाहता था कि यीशु परमेश्वर के उपायों पर संदेह करे।

आयत 4. इन परीक्षाओं का सामना करने के लिए अपनी ईश्वरीय सामर्थ का इस्तेमाल करने के बजाय यीशु ने उनका सामना वैसे ही किया जैसे हर मनुष्य को करना आवश्यक है- परमेश्वर के वचन की सामर्थ पर भरोसा रखना। उसने इस परीक्षा का उत्तर वैसे ही दिया जैसे

हर परीक्षा का उत्तर दिया, पवित्र शास्त्र के वचनों के साथ: ''**लिखा है कि 'मनुष्य केवल रोटी ही से नहीं, परन्तु हर एक वचन से जो परमेश्वर के मुख से निकलता है जीवित रहेगा।'** '' व्यवस्थाविवरण 8:3 से लिया गया उसका उद्धरण सप्तत्ति अनुवाद में मिलता है। यह वचन परमेश्वर के अपने ''पुत्र'' इस्राएल को (निर्गमन 4:22) उसके उपाय पर निर्भर रहना सिखाने के बारे में है (निर्गमन 16; देखें भजन संहिता 78:17-20)। परमेश्वर के लोगों के मिस्र में से चले जाने के बाद उसने जंगल में उन्हें भूखा रहने देकर उनके विश्वास को परखा। वे मूसा और हारून के ऊपर बुड़बुड़ाए थे। उनमें से कुछ ने तो मिस्र में लौट जाना चाहा था जहां खाना लगातार और हर रोज़ मिलता था। उनके विश्वास की कमी के बावजूद परमेश्वर ने मन्ना अर्थात ''स्वर्ग से रोटी'' भेजकर अनुग्रहपूर्वक उनकी सम्भाल की। परमेश्वर अपने लोगों को उस पर भरोसा रखना सिखा रहा था।

प्राचीन इस्राएल के विपरीत यीशु ने परमेश्वर के पुत्र के रूप में उपयुक्त भरोसे को दिखाया। न तो वह परमेश्वर के विरुद्ध बुड़बुड़ाया और न ही उसने मामले को अपने हाथों में लिया। उसने बपतिस्मे के समय उसके उद्देश्यों की पूर्ति के लिए उसे दी गई पवित्र आत्मा की सामर्थ का अनुचित लाभ नहीं उठाया। इसके विपरीत उसने विनम्रतापूर्वक भरोसा किया कि परमेश्वर अपनी प्रतिज्ञाओं को पूरा करके उसकी आवश्यकताओं का पूरा करेगा।

लियोन मौरिस ने सही कहा कि ''मनुष्य केवल रोटी ही से जीवित नहीं रहेगा'' वाक्यांश ''रोटी के महत्व का इनकार नहीं करता (फलस्तीन में यह 'भोजन' का प्रयाय ही था), बल्कि यह इसके विशेष महत्व का इन्कार नहीं करता है। केवल भोजन से जीवित रहने वाला प्राणी या व्यक्ति बहुत ही निर्धन व्यक्ति होता है।''[10] यीशु ने कहा, ''मेरा भोजन यह है कि अपने भेजने वाले की इच्छा के अनुसार चलूं और उसका काम पूरा करूं'' (यूहन्ना 4:34)। इसके अलावा उसने अपने चेलों को भौतिक वस्तुओं (भोजन, पीने और पहनने) का पीछा न करने बल्कि अपने मनों में परमेश्वर के राज्य को पहल देने की शिक्षा दी (6:31-33)।

दूसरी परीक्षा (4:5-7)

[5]तब इब्लीस उसे पवित्र नगर में ले गया और मन्दिर के कंगूरे पर खड़ा किया। [6]और उस से कहा यदि तू परमेश्वर का पुत्र है, तो अपने आप को नीचे गिरा दे, क्योंकि लिखा है,

कि वह तेरे विषय में अपने स्वर्गदूतों को आज्ञा देगा;
और वे तुझे हाथों हाथ उठा लेंगे,
कहीं ऐसा न हो कि तेरे पांवों में पत्थर से ठेस लगे।

[7]यीशु ने उस से कहा, यह भी लिखा है, कि तू प्रभु अपने परमेश्वर की परीक्षा न कर।

आयत 5. फिर **इबलीस** यीशु को यरूशलेम में ले गया, जिसे **पवित्र नगर** कहा गया है (देखें नहेम्याह 11:1, 18; यशायाह 48:2; 52:1; दानिय्येल 9:24; प्रकाशितवाक्य 11:2)। दाऊद के समय में यरूशलेम इस्राएल की राजधानी नगर बन गया था। यहीं पर उसके पुत्र सुलैमान ने जीवित परमेश्वर के लिए एक पवित्र मन्दिर बनवाया। इसलिए परमेश्वर की पवित्र

उपस्थिति ने नगर को ''पवित्र'' बना दिया। प्रकाशितवाक्य के अन्त में यह भाषा नये यरूशलेम अर्थात स्वर्गीय नगर को दे दी गई जहां परमेश्वर अपने लोगों के साथ वास करेगा (प्रकाशितवाक्य 21:2, 10; 22:19)।

शैतान में मसीह के साथ ऐसा कुछ करने की सामर्थ नहीं थी जो उसने करना नहीं चुनना था। इस बात में यह कहना कि शैतान **उसे ले गया** (देखें 4:8) इतना ही सुझाव देता है कि वह उसे उस स्थान पर ले गया और यीशु ने उसके नेतृत्व को स्वेच्छा से माना। वचन में ऐसा कोई संकेत नहीं है जो जाने के सामान्य माध्यम के अलावा किसी और माध्यम को बताता हो।

यरूशलेम में शैतान ने यीशु को **मन्दिर के कंगूरे पर खड़ा किया**। ''कंगूरा'' शब्द का अधिक अक्षरश: अनुवाद ''पंख'' हो सकता है: यह सबसे ऊंचे स्थान (''नोक'') या सिरा (''शिखर'') का अर्थ देता है। यूनानी शब्द *hieron* इसका अनुवाद ''मन्दिर'' हुआ है आम तौर पर मन्दिर के प्रांगण के लिए इस्तेमाल होता है। मन्दिर के पहाड़ पर जहां यीशु खड़ा था सही सही स्थान पर आज भी सवाल उठाया जाता है। रॉबर्ट एच. गुंडरी ने तीन सम्भावनाएं दी हैं: (1) मन्दिर का कंगूरा ही, (2) मन्दिर में प्रवेश द्वार का सरदल और (3) बाहरी आंगन का दक्षिण पूर्व का कोना (शाही ओसारा)।[11] तीसरे विकल्प में सबसे लम्बा स्थान ''किद्रोन घाटी में लगभग 200 फुट''[12] होगा। जोसेफस ने उतराई का वर्णन किया है:

> [शाही ओसारा] सूर्य के नीचे किसी भी अन्य स्थान से बढ़कर उल्लेख किए जाने के योग्य; क्योंकि तराई चाहे बहुत गहरी थी और इसका तला देखा नहीं जा सकता था, ... यदि कोई कंगूरों की चोटी से नीचे को देखता या उन दोनों ऊंचाइयों से नीचे को, तो वह चक्कर खा जाता [चकरा जाता], या उसे गहरी खाई दिखाई न देती।[13]

शैतान यीशु को यरूशलेम में मन्दिर के पहाड़ पर ले गया हो सकता है, क्योंकि इसके साथ यहूदियों का एक विशेष विश्वास जुड़ा था। बाद की रब्बियों की एक परम्परा में कहा जाता है, ''जब राजा अर्थात मसीहा, अपने आपको प्रगट करेगा तो वह आकर मन्दिर की छत पर खड़ा होगा।''[14] उसका वैभवशाली रूप सारे इस्राएल को उस पर विश्वास करने के लिए विवश कर देगा। गुंडरी ने इस यहूदी विश्वास को समझते हुए लिखा, ''ईश्वरीय उपाय और जंगल में अकेलेपन का लाभ उठाने के लिए कई रुकावटें मिल जानी थीं, इस कारण मसीहा के चिह्न को सार्वजनिक रूप में दिखाने का संकेत है।''[15] यदि यीशु मन्दिर से कूद जाता, तो विलियम हैंड्रिक्सन कहता है कि ''क्रूस से बच [गया होता], मुकुट संघर्ष या सन्ताप के बिना मिल जाता।''[16]

आयत 6. शैतान यीशु को अपनी पहचान को साबित करने का आग्रह कर रहा था: ''**यदि तू परमेश्वर का पुत्र है तो अपने आपको नीचे गिरा दे।**'' अपनी चुनौती के समर्थन के लिए शैतान ने भजन संहिता 91:11, 12 को उपयोग किया जहां परमेश्वर ने विश्वासयोग्य व्यक्ति को बचाने के लिए **अपने स्वर्गदूतों** को भेजने की प्रतिज्ञा की: ''वे तुझे हाथों हाथ उठा लेंगे, कहीं ऐसा न हो कि तेरे पांवों में पत्थर से ठेस लगे।'' मौरिस ने व्याख्या की है, ''शैतान सुझाव दे रहा था कि स्वर्गदूतों द्वारा की जाने वाली देखभाल ऐसी होगी कि छोटी से छोटी चोट भी बिल्कुल असम्भव है।'' पांव की उंगली तक भी नहीं मुड़नी थी![17] इस आयत में और लूका के विवरण में

(लूका 4:10, 11), शैतान को पवित्र शास्त्र में से उद्धृत करते हुए दिखाया गया है। सही वचन को उद्धृत करने के बावजूद उसने इसे संदर्भ से बाहर कर दिया।

आयत 7. यीशु ने पवित्र शास्त्र में से साबित करके कि इस वचन का अर्थ लोगों को प्रोत्साहित करने के लिए था न कि परमेश्वर को परखने की मंशा से उसके इस दुरुपयोग में सुधार किया। एक बार फिर उसने, व्यवस्थाविवरण से उद्धृत किया: ''**यह भी लिखा है तू प्रभु अपने परमेश्वर की परीक्षा न कर**'' (व्यवस्थाविवरण 6:16)। यह वचन इस्राएलियों के मसाह में परमेश्वर को परखने की बात है, जिसका वर्णन निर्गमन 17:1-7 में है। जंगल में रपीदीम में पहुंचकर इस्राएलियों को पीने को पानी न मिला। वे मूसा के विरुद्ध बुड़बुड़ाने लगे और वहां उन्होंने परमेश्वर को परखा। उन्होंने कहा, ''क्या यहोवा हमारे बीच में है या नहीं?'' उस स्थान को ''मस्सा'' (''परीक्षा'') और ''मरीबा'' (''झगड़ा'') नाम दिया गया। व्यवस्थाविवरण 6:16 से उद्धृत करते हुए यीशु यह घोषणा कर रहा था कि वह परमेश्वर को परखेगा नहीं। उस को अपने पिता में भरोसा था और उसने इस्राएलियों की तरह उस भरोसे को नहीं तोड़ना था।[18]

तीसरी परीक्षा (4:8-10)

[8]फिर शैतान उसे एक बहुत ऊंचे पहाड़ पर ले गया और सारे जगत के राज्य और उनका विभव दिखाकर [9]उससे कहा, कि यदि तू गिरकर मुझे प्रणाम करे तो मैं यह सब कुछ तुझे दे दूंगा। [10]तब यीशु ने उससे कहा, हे शैतान दूर हो जा, क्योंकि लिखा है, कि तू प्रभु अपने परमेश्वर को प्रणाम कर, और केवल उसी की उपासना कर।

आयत 8. यीशु इस संसार में प्रतिज्ञा किए हुए राज्य के ऊपर राजा बनने के लिए आया। यदि परमेश्वर को उस प्रतिज्ञा के अनुसार करना था तो यीशु के लिए क्रूस के रास्ते से होकर जाना आवश्यक था। शैतान महिमा पाने के लिए उसके सामने छोटा रास्ता रख रहा था: **फिर शैतान उसे एक बहुत ऊंचे पहाड़ पर ले गया और सारे जगत के राज्य और उनका विभव दिखाया।** यह दृश्य मूसा के नबो पहाड़ पर जाकर हर दिशा से प्रतिज्ञा किए हुए देश को देखने का स्मरण दिलाता था (व्यवस्थाविवरण 3:27; 34:1-4)। इस संदर्भ में *kosmos* संसार का संकेत देता है, जैसा कहीं और भी है (रोमियों 1:8; 4:13; कुलुस्सियों 1:6)।[19] यदि ऐसा है तो कोसमोस का अर्थ सम्भव्यतया केवल फलस्तीन है। दूसरी ओर कुछ लोग यह तर्क देना चाहेंगे कि शैतान और यीशु सचमुच में पृथ्वी के ''सब राज्यों'' को देख रहे थे। यीशु ने सचमुच में सभी राज्यों को देखा या केवल कुछ राज्यों को, या केवल अपने मन की आंखों से उनकी कल्पना की इस परीक्षा का इतना महत्व नहीं है।

आयत 9. पुराने नियम में संकेत था कि मसीहा सब जातियों के ऊपर प्रभुता करेगा (भजन संहिता 2:6, 8; 72:8-11; दानिय्येल 7:14)। परन्तु यह विश्वव्यापी शासन केवल मसीह के दुख उठाने और मृत्यु के बाद ही होना था (28:18; फिलिप्पियों 2:8-11)। संक्षेप में शैतान यीशु की परीक्षा कम से कम विरोध का मार्ग अपनाने के लिए कर रहा था। **उस ने उस से कहा, ''यदि तू गिरकर मुझे प्रणाम करे तो मैं यह सब कुछ तुझे दे दूंगा।''**

शैतान यीशु को संसार के राज्य कैसे दे सकता था? लूका के अनुसार शैतान ने यह भी

कहा, ''क्योंकि [यह सब अधिकार] मुझे सौंपा गया है; और जिसे चाहता हूं उसी को देता हूं'' (लूका 4:6)। यदि शैतान की बात पर भरोसा किया जाए तो यह स्पष्ट है कि परमेश्वर ने उसे संसार पर कुछ अधिकार दिया है। यह व्याख्या उन अन्य वचनों के साथ मेल खाती है जो बताते हैं कि सीमित शक्ति के साथ शैतान ''इस संसार के सरदार'' (यूहन्ना 16:11) और ''इस जगत का ईश्वर'' है (2 कुरिन्थियों 4:4)।

आयत 10. यीशु ने यह कहते हुए अपना जवाब दिया, **''हे शैतान दूर हो जा!''** ऐसी अभिव्यक्ति बाद में मत्ती मिलती है, जब यीशु ने पतरस को कहा, ''हे शैतान, मेरे सामने से दूर हो!'' (16:23)। उस अवसर पर शैतान परीक्षा लेने के लिए पतरस को इस्तेमाल कर रहा था, जैसे वह एक बार फिर उसे क्रूस से बचने के लिए मना रहा हो। इस संदर्भ में यीशु शैतान को उसके सामने से चले जाने को कह रहा था।

एक बार फिर यीशु ने शैतान को पवित्र शास्त्र के साथ जवाब दिया। उसने सप्तत्ति अनुवाद में से व्यवस्थाविवरण 6:13 को उद्धृत किया: **''क्योंकि लिखा है, कि तू प्रभु अपने परमेश्वर को प्रणाम कर, और केवल उसी की उपासना कर।''** प्रत्येक उत्तर में यीशु ने व्यवस्थाविवरण की पुस्तक में से उद्धृत किया। इस उद्धरण के मूल संदर्भ में इस्राएल के लिए एक चेतावनी थी। लोगों के प्रतिज्ञा किए हुए देश में प्रवेश करने के बाद, उन पर यह भूल जाने की परीक्षा आनी थी कि वह वही प्रभु है जिसने उन्हें अपनी वाचा की प्रतिज्ञाओं के अनुसार आशीष दी थी। इसके अलावा उन्होंने कनानियों के देवी देवताओं की पूजा (कई बार राजनैतिक लाभ के लिए) से प्रभावित होना था। व्यवस्थाविवरण 6:14, 15 कहता है, ''तुम पराय देवताओं के अर्थात अपने चारों ओर के देशों के लोगों के देवताओं के पीछे न हो लेना; क्योंकि तेरा परमेश्वर यहोवा जो तेरे बीच में है वह जल उठने वाला ईश्वर है; कहीं ऐसा न हो कि तेरे परमेश्वर यहोवा का कोप तुझ पर भड़के और वह तुझ को पृथ्वी पर से नष्ट कर डाले।''

परमेश्वर के लोग बार-बार चाहे कनानियों के देवी देवताओं की पूजा करके नाकाम रहे थे पर परमेश्वर के पुत्र यीशु पिता के अपने समर्पण में पूरी तरह से विश्वासयोग्य है। उसने शैतान के आगे झुकने से इनकार कर दिया।[20] परमेश्वर के लिए पूरी तरह से वचनबद्धता सिंहासन के लिए उसका एकमार्ग था। मौरिस ने ''केवल'' शब्द की ओर ध्यान दिलाया है। उसने लिखा है, '' *केवल* एक महत्वपूर्ण शब्द है। यह ध्यान दिया जाना आवश्यक है कि शैतान ने यीशु को सारी पृथ्वी पर प्रभुता देने की पेशकश की परन्तु तब यदि वह झुककर उसे सलाम करे, परन्तु यीशु ने केवल परमेश्वर को दण्डवत किया और स्वर्ग और पृथ्वी में सारा अधिकार उसे दे दिया गया (28:18)।''[21] मसीह को मुकुट को पहनने के लिए आवश्यक था कि पहले क्रूस का दुख सहे। ''जीवन का मुकुट'' (प्रकाशितवाक्य 2:10) पहनने का हमारे लिए एकमात्र ढंग वफ़ादारी के उसके नमूने को मानना है (1 पतरस 2:21-25)।

सारांश (4:11)

[11]तब शैतान उसके पास से चला गया। और देखो, स्वर्गदूत आकर उसकी सेवा करने लगे।

आयत 11. तीसरी परीक्षा के बाद, यीशु की आज्ञा के अनुसार (4:10), **शैतान उसके**

पास से चला गया। लूका 4:13 लिखता है कि तब शैतान ''कुछ समय के लिए उसके पास से चला गया।'' यीशु पर आने वाली परीक्षाएं केवल जंगल में आई परीक्षाएं नहीं थी। वह ''सब बातों में हमारे समान परखा गया'' था (इब्रानियों 4:15)। शैतान ने क्रूस के पूरे रास्ते यीशु की परीक्षा ली। वह तब भी परीक्षा में पड़ा हो सकता है जब यहूदियों की भीड़ ने उसे ज़बर्दस्ती राजा बनाने की कोशिश की थी (यूहन्ना 6:15), जब लोगों की भीड़ चिह्न मांग रही थी (लूका 11:29), और जब उसके ही एक चेले ने क्रूस को एक ओर करने के लिए कहकर उसकी परीक्षा ली थी (16:21-23)। उसके क्रूस पर लटके होने के समय भी शैतान की परीक्षाओं को भीड़ में से सुना जा सकता था, जो पुकार रही थी, ''हे मन्दिर के ढहाने वाले और तीन दिन में बनाने वाले, अपने आप को तो बचा; यदि तू परमेश्वर का पुत्र है, तो क्रूस पर से उतर आ'' (27:40)। आत्माओं को निगलने की अपनी भूख में शैतान जंगली जानवर की तरह ढूंढ़ता रहता है कि किसको फाड़ खाए (1 पतरस 5:8)।

शैतान के चले जाने के बाद, **स्वर्गदूत आकर उसकी सेवा करने लगे**। इब्रानियों की पुस्तक के लेखक ने स्वर्गदूतों को ''सेवा टहल करने वाली आत्माएं'' बताया है (इब्रानियों 1:14)। निश्चय ही उन्होंने शैतान द्वारा परीक्षा लिए जाने के बाद यीशु को हिम्मत दी, बिल्कुल वैसे ही जैसे गतसमनी में प्रार्थना करने के बाद एक स्वर्गदूत ने यीशु को दलेरी दी थी (लूका 22:43)।

❖❖❖❖❖ **सबक** ❖❖❖❖❖

परीक्षा के समयों में (4:1-11)

शायद यीशु की परीक्षाओं को पढ़ते हुए हमने शैतान, उपवास और परीक्षाओं की प्रकृति पर सवाल पूछे। मत्ती 4:1-11 का अध्ययन करते हुए आइए इन पर देखते हैं।

हमारा असली विरोधी कौन है? हमारे लिए इस बात से चौकस होना अवश्यक है कि हमारा असली विरोधी कौन है। शैतान भरमाने वाला है। यीशु ने कहा कि वह ''आरम्भ से हत्यारा'' और ''झूठा है वरन झूठ का पिता है'' (यूहन्ना 8:44)। धोखे की उसकी सबसे बड़ी खूबी शायद सींगों और पूछ वाले लाल सूट पहने एक मसखरे पर हंसाना है जबकि वह शैतानी कार्य करता रहता है। वह लोगों को अच्छा दिखकर धोखा देता है (यशायाह 5:20)। वह पोर्नोग्राफी को ''कला,'' पाप को ''कुव्यवस्था,'' व्यभिचार को ''सार्थक सम्बन्ध,'' समलैंगिकता को ''वैकल्पिक जीवन शैली'' और शराब पीने को ''सामाजिक होना'' कहता है। वह लोगों को अपने शैतानी कामों को करने के लिए उकसाता है। पौलुस ने चेतावनी दी कि उसके सेवक ''मसीह के प्रेरितों'' का रूप धार सकते हैं और वह स्वयं ''ज्योतिर्मय स्वर्गदूत'' का भेष बना सकता है (2 कुरिन्थियों 11:13, 14)। अच्छे अच्छे वक्ता ''शैतान की शिक्षाओं'' का प्रचार करके लोगों की भीड़ को इकट्ठा कर सकते हैं (1 तीमुथियुस 4:1, 2)। वे ''कपट में झूठ'' और आधा सच बताते हैं। वे लोगों में घृणा और उनमें फूट डालते हुए प्रेम और एकता का प्रचार कर सकते हैं।

उपवास के विषय में? उपवास अधिकतर मसीही लोगों द्वारा नज़रअन्दाज़ किया गया और न माना जाने वाला विषय है, परन्तु यह बाइबल के पुराने और नये दोनों नियमों का विषय है और

रखा जाता था। यीशु ने उपवास रखा, जैसा कि हम यहां वचन में देखते हैं। उसने अपने चेलों को भी उपवास रखने के लिए प्रोत्साहित किया (6:16-18; 17:21)। तरसुस का शाऊल (पौलुस) उपवास रखता था (प्रेरितों 9:9) और कई बार सुसमाचार की खातिर उसे भूखा रहना पड़ा (2 कुरिन्थियों 6:5; 11:27)। पौलुस ने संकेत दिया कि उपवास रखना (शायद भोजन के बजाय यौन सम्बन्ध बनाने से परहेज रखना) पतियों और पत्नियों के लिए अच्छा होगा (1 कुरिन्थियों 7:5)। आरम्भिक कलीसिया महत्वपूर्ण निर्णय लिए जाने से पहले उपवास रखती थी (प्रेरितों 13:2; 14:23)।

यीशु ने अपने चेलों को दिखावे के लिए उपवास में भाग लेने के लिए नहीं कहा पर उसी व्यवहार को बताया जो उस समय यहूदियों में आम पाया जाता था (6:16-18)। उसने गलत प्रकार के उपवास को दोषी ठहराया परन्तु निश्चय ही उसने उपवास रखने को गलत नहीं कहा। उसने यह नहीं कहा, ''*यदि* तू उपवास करे'' बल्कि कहा कि ''*जब* तुम उपवास करो ...'' (6:16)। उसने यह भी संकेत दिया कि उसके चेले उसके स्वर्ग में लौट जाने के बाद उपवास करेंगे (9:14, 15; मरकुस 2:18-20; लूका 5:33-35)।

उपवास करना उपवास रखने के लिए नहीं बल्कि यह मन के व्यवहार का और मन की स्थिति का प्रमाण है। उपवास न रखकर हम कई आत्मिक लाभों से वंचित हो सकते हैं। गाई एन. वुडस ने लिखा है:

> उपयुक्त ढंग से भाग लेकर उपवास रखना आत्मिक आशीष अर्थात इच्छा का अनुशासन और भीतरी सामर्थ और शक्ति देने का अभ्यास बन सकता है। कई बार हम सब को दृढ़तापूर्वक अपने मनों को सांसारिक इच्छा और शारीरिक लालसा के हर रूप को निकालकर प्रार्थना और उपवास के द्वारा परमेश्वर के बहुत निकट आकर जीवन में उसके समर्थन और अगुआई का दावा करना चाहिए। ऐसा अनुभव हम सबको असीमित रूप में मज़बूत, विश्वास में धनी और मसीही जीवन जीने के लिए बेहतर ढंग से तैयार करेगा।[22]

उपवास और इसके लाभों की प्रतिज्ञाओं को ध्यान में रखकर विचार करना हमारे लिए अच्छा है। उपवास करना कई परिस्थितियों में समझदारी है और लाभदायक हो सकता है:

1. जब किसी की परीक्षा हो रही हो और वह परेशानी में हो या दुख से गिरा हो;
2. तब किसी मसीही को पता चल जाता है कि वह अपने मसीही जीवन में उदासीनता की ओर बढ़ रहा है;
3. जब कलीसिया पर परेशानी आती है;
4. जब कलीसिया में बड़े पदों के निर्णय लिए जाते हैं, जैसे ऐल्डरों या डीकनों या प्रचारक को चुना जाना;
5. जब कोई व्यक्ति जीवन में कोई महत्वपूर्ण निर्णय ले रहा या ले रही हो।

शैतान हमें कैसे परखता है? आमतौर पर ध्यान दिलाया जाता है कि यीशु की परीक्षा वैसे ही हुई जैसे हमारी परीक्षा होती है, यानी शैतान ने परीक्षा के उन्हीं ढंगों का इस्तेमाल किया जिनका इस्तेमाल वह हमारे ऊपर करता है: शरीर की अभिलाषा, आंखों की अभिलाषा, जीविका

का घमण्ड (1 यूहन्ना 2:16)। शैतान ने हव्वा को इसी प्रकार भरमाया था। वह पहले शरीर की अभिलाषा से परीक्षा में पड़ी थी, जब उसने देखा कि फल ''खाने के लिए अच्छा'' है। दूसरा, उसने देखा कि यह ''देखने में मनभाऊ'' है। अन्त में यह ''बुद्धि देने के लिए चाहने योग्य भी था'' (उत्पत्ति 3:6)। यीशु की परीक्षा शरीर की अभिलाषा के द्वारा हुई जब शैतान ने उसे पत्थरों को रोटियों में बदल देने को कहा (मत्ती 4:3)। अपने आपको मन्दिर के कंगूरे से नीचे गिराने की परीक्षा जीविका के घमण्ड की परीक्षा थी (4:6)। आखों के द्वारा उसकी परीक्षा तब हुई जब शैतान ने उसे संसार के सारे राज्य दिखाए और उसे उन्हें देने की पेशकश की (4:8)। याकूब ने लिखा, ''परन्तु प्रत्येक व्यक्ति अपनी ही अभिलाषा से खिंचकर, और फंसकर परीक्षा में पड़ता है। फिर अभिलाषा गर्भवती होकर पाप को जन्म देती है और पाप जब बढ़ जाता है तो मृत्यु को उत्पन्न करता है'' (याकूब 1:14, 15)।

परीक्षा एक सामान्य अनुभव है (1 कुरिन्थियों 10:13)। जब हमारा सामना परीक्षा से हो तो हमें इससे हार नहीं माननी चाहिए। जैसे यीशु ने किया, हम भी इसका सामना वैसे ही करके अपने आपको आत्मा की तलवार के साथ लैस कर (इफिसियों 6:17) सकते हैं।

सारांश 4:1–11 का अध्ययन इन सबकों का सुझाव देता है:

1. हमारा बड़ा विरोधी शैतान वास्तविक और निष्ठुर है।
2. यीशु ने उपवास रखा पर मनुष्यों से प्रशंसा पाने के लिए उपवास रखने को गलत कहा।
3. परीक्षा में पड़ना अपने आप में पाप नहीं है।
4. शैतान हमारी शरीर की अभिलाषा, आंखों की अभिलाषा और जीविका के घमण्ड के द्वारा परीक्षा लेता है।
5. हम परमेश्वर की इच्छा को जानकर और मानकर परीक्षा पर विजय पा सकते हैं (4:4, 7, 10)।
6. परीक्षा पर विजय पाने से मधुर लाभ मिलते हैं (4:11)।[23]

परीक्षा का सामना करना (4:1-11)

यीशु की परीक्षा की कहानी सुसमाचार के तीन लेखकों द्वारा बताई गई है (मत्ती, मरकुस, और लूका)।[24] स्पष्टतया यीशु चाहता था कि हमें पता चले कि उसने परीक्षा का सामना करके उस पर कैसे जय पाई ताकि हम भी इस पर विजय पा सकें। इस कहानी में हमें परीक्षा के तीन तथ्यों का पता चलता है:

यह जीवन के सबसे बड़े क्षणों के बाद आ सकती है। यीशु के बपतिस्मे के तुरन्त बाद, उसे ''आत्मा जंगल में ले गई ताकि इबलीस से उसकी परीक्षा हो'' (4:1)। इसी प्रकार से हमारे आत्मिक रोमांच के समय आमतौर पर परीक्षा और परेशानी से अन्धकार भरे समय आते हैं।

आम तौर पर यह तर्कसंगत विचार से मिलकर अपने आप में छिपी होती है (4:3–10)। शैतान ने अपनी स्थिति को तर्कसंगत ढंग से यीशु को मनाने की कोशिश की और कम से कम विरोध का ढंग अपनाया। जब हम तर्क देते हैं तो हम अपने आपको कुछ ऐसा करने के लिए बहाना बनाने की कोशिश कर रहे होते हैं। जिसका हमें पता होता है कि हमें नहीं करनी चाहिए।

इसका स्वभाव शैतानी है। शैतान हमें शक्ति या आनन्द की हमारी इच्छा के द्वारा भरमा सकता है।

यदि हम इसे हराना चाहते हैं तो हमें इसका सामना करना आवश्यक है। यीशु ने परमेश्वर के वचन के साथ अपनी परीक्षाओं का सामना दृढ़ता से किया। अन्त में शैतान ''कुछ समय के लिए उसके पास से चला गया'' (लूका 4:13)। याकूब ने लिखा है, ''इसलिए परमेश्वर के अधीन हो जाओ; और शैतान का सामना करो, तो वह तुम्हारे पास से भाग जाएगा'' (याकूब 4:7)।

क्या यीशु की परीक्षा हो सकती थी ? (4:1-11)

यह प्रश्न आसान नहीं है कि पाप करने के लिए यीशु की परीक्षा हो सकती थी या नहीं। बराबर के शैक्षणिक स्तर वाले लोग इस विषय पर एक दूसरे से असहमत होते हैं। इस विचार से कि पाप करने के लिए यीशु की परीक्षा हो सकती थी, आपत्ति करने वाले अधिकतर लोग यह ध्यान दिलाते हुए उत्तर देते हैं कि ''परीक्षा'' की गई का अनुवाद ''परखा गया'' ही हो सकता है।

इब्रानियों की पुस्तक के लेखक ने कहा कि यीशु ''सब बातों में हमारे समान परखा गया, तौभी निष्पाप निकाला'' (इब्रानियों 4:15)। यह कथन इस बात का संकेत देता है कि वह पाप कर सकता था पर उसने किया नहीं। इस तथ्य का कि उसने पाप नहीं किया अर्थ कुछ क्यों नहीं हो सकता यदि वह पाप नहीं कर सकता था? जहां पाप में फंसने का अवसर न हो, वहां पाप की परीक्षा नहीं हो सकती। एच. लियो बोल्स ने लिखा है कि ''यीशु की परीक्षा उसके बपतिस्मे की तरह ही *वास्तविक* थी।''[25]

इस समस्या को मसीह के स्वभाव को समझकर सुझाया जा सकता है। यीशु किसी भी अन्य व्यक्ति की तरह नहीं था जो पृथ्वी पर कभी रहा। वह ईश्वरीयता और मनुष्यता को मिलाने वाला अर्थात परमेश्वर का पुत्र और मनुष्य का पुत्र था। हमारे विपरीत वह दोहरी प्रकृति का था यानी वह ईश्वरीय भी था और मानवीय भी। यदि ऐसा न होता तो वह क्रूस पर मर नहीं सकता था। क्या परमेश्वर मर सकता है? यीशु मरा; उसने अपना मानवीय स्वभाव त्याग दिया (देखें यूहन्ना 10:17, 18; लूका 23:46)। यीशु ने वैसे ही परीक्षा का सामना किया जैसे हम करते हैं, केवल अपने मानवीय स्वभाव और इच्छा से।

मसीह की परीक्षाएं (4:1-11)

स्वर्ग से आवाज ने मसीह के बपतिस्मे के समय उसकी ईश्वरीयता की घोषणा की। पिता ने कहा, ''यह मेरा प्रिय पुत्र है, जिससे मैं अत्यन्त प्रसन्न हूं'' (3:17)। इसके शीघ्र बाद, यीशु को आत्मा द्वारा जंगल में ले जाया गया जहां शैतान से उसकी परीक्षा हुई। यीशु ने हर परीक्षा में अपने आपको परमेश्वर का विश्वासयोग्य पुत्र साबित किया। जिस कारण उसने शैतान को उसे क्रूस के मार्ग पर जाने से रोकने की अनुमति नहीं दी, जहां पर उसने पिता की इच्छा को पूरा करते हुए संसार का उद्धारकर्त्ता बनना था।

पहली नज़र में यीशु की परीक्षा हमारे अपने अनुभव से बाहर से लग सकती है। हम में पत्थरों को रोटियां बनाने की सामर्थ नहीं है और हम ऊंची बिल्डिंग से कूदने या शैतान को सलाम करने की इच्छा नहीं करेंगे। परन्तु जैसा हेयर ने लिखा है, ''मुख्य, ध्यान दिलाने वाली परीक्षा यह

है कि यीशु ने परमेश्वर के साथ परमेश्वर से कम के रूप में व्यवहार के लिए वैसे ही परीक्षा सही जैसे हमारे ऊपर आती है।''[26] इसलिए हम सब अपने जीवनों में इस संघर्ष को देख सकते हैं।

तौभी यदि हम यीशु की परीक्षाओं को और नज़दीक से देखें, तो हमें अपनी ही परीक्षा की समानताएं मिल सकती हैं। (1) शैतान यीशु के पास उसके निर्बल होने और भूख लगने पर गया और उसने अवैध ढंग से वैद्य परीक्षा की पूर्ति करने के लिए उसकी परीक्षा की (4:3)। शैतान आज भी वही नीति अपनाता है-चाहे चोरी, व्यभिचार या किसी अन्य बुराई के द्वारा हमें परीक्षा में डालता है। (2) शैतान ने यीशु को अपनी पहचान साबित करने के लिए परीक्षा में डाला (4:5, 6)। आज भी वह हमारे गर्व को हमें दुख देने वाली बातें कहकर या मूर्खतापूर्ण काम करने के प्रयास करके दूसरों पर हमारी श्रेष्ठता को साबित करने के लिए हमें परीक्षा में डालता है। (3) शैतान ने यीशु को आसान रास्ता ले लेने के लिए अर्थात बिना क्रूस के मुकुट को पाने का रास्ता अपनाने की परीक्षा में डाला (4:8, 9)। आज भी वह कम से कम विरोध का रास्ता चुनकर हमारी नैतिकताओं से समझौता करने के लिए हमें परीक्षा में डालता है। यह किसी टैस्ट में नकल करना, ''सफेद झूठ'' बोलना या किसी जिम्मेदारी को पूरा न करना हो सकता है।

यीशु की तरह ही हमें परमेश्वर के विश्वासयोग्य पुत्र बनने को कहा जाता है (देखें गलातियों 3:26-29)। मसीह के विपरीत हम आम तौर पर परीक्षाओं के सामना करने में हार मान जाते हैं। सौभाग्य से हमारे पास एक ऐसा महायाजक है जो ''हमारी निर्बलताओं में हमारे साथ दुखी'' हो सकता है क्योंकि वह सब बातों में हमारे समान ''परखा'' गया। वह हमारी ओर से पिता की उपस्थिति में जाने के योग्य है क्योंकि वह ''निष्पाप'' है (इब्रानियों 4:14-16)।

डेविड स्टिवर्ट

खामोशी और एकांत के अनुशासन (4:1-11)

हम एक शोर शराबे वाले, व्यस्त संसार में रहते हैं जिस कारण हमें खामोशी का अनुशासन बनाने की आवश्यकता है। कई बार हमें जानबूझकर अपने आस पास के संसार में से निकलकर किसी ऐसे स्थान पर जाना चाहिए जहां लोगों की बातें न हों, जहां कोई टीवी न हो, सीडी प्लेयर न हो या कोई फोन न हो। इन तकनीकों के बिना हम जीवित कैसे रहते?

हमें एकांत के अनुशासन में रहना सीखना होगा। हमें ''अकेले'' में जाकर आत्मिक बातों पर मनन और प्रार्थना में बिना किसी रुकावट के कुछ समय बिताना चाहिए।

हमें इन अनुशासनों को क्यों मानना चाहिए? कुछ कारण इस प्रकार हैं।

1. हम यीशु द्वारा ठहराए हुए नमूने को मान रहे होंगे (4:1; मरकुस 1:35; लूका 4:42)।
2. हम परमेश्वर के निकट आएंगे (भजन संहिता 46:10; याकूब 4:7, 8)।
3. हमें मानसिक, शारीरिक, आत्मिक और भावनात्मक रूप में सामर्थ मिलेगी (लूका 2:52)।
4. हम अपने जीवनों के लिए परमेश्वर की इच्छा को जानकर समय बिताएंगे।
5. हम अनजान बातों का सामना करने के लिए बेहतर ढंग से योग्य हो जाएंगे।

टिप्पणियां

[1]रॉबर्ट एच. माउंस, *मैथ्यू,* न्यू इंटरनैशनल बिब्लिकल कमैंटरी (पीबॉडी, मैसाचुएट्स: हैंड्रिक्सन पब्लिशर्स, 1991), 28. [2]*डिक्शनरी ऑफ़ जीज़स एण्ड द गॉस्पल्स,* जोएल बी. ग्रीन एण्ड स्कॉट मैक्नाइट (डाउनर्स ग्रोव, इलिनोइस: इंटरवर्सिटी प्रैस, 1992), 824-25. [3]डग्लस आर. ए. हेयर, *मैथ्यू,* इंटरप्रिटेशन (लुइसविल्ले: जॉन नॉक्स प्रैस, 1993), 24. [4]आर. टी. फ्रांस, द *गॉस्पल अक्कॉर्डिंग टू मैथ्यू,* द टिंडेल न्यू टैस्टामैंट कमैंट्रीज़ (ग्रैंड रैपिड्स, मिशिगन: विलियम बी. ईर्डमैंस पब्लिशिंग कं., 1985), 97. [5]जैक पी. लुईस, द *गॉस्पल अक्कॉर्डिंग टू मैथ्यू,* पार्ट 1, द लिविंग वर्ड कमैंट्री (आस्टिन, टैक्सस: स्वीट पब्लिशिंग कं., 1976), 67. [6]वाल्टर बाउर, *ग्रीक-इंग्लिश लैक्सिकन आफ़ द न्यू टैस्टामैंट एण्ड अदर अरली क्रिश्चियन लिटरेचर,* 3रा संस्क., संशो. व संपा. फ्रैड्रिक डब्ल्यू. डंकन (शिकागो: यूनिवर्सिटी ऑफ़ शिकागो प्रैस, 2000), 793. [7]जॉन मैकार्थर, जूनि., द *मैक्कार्थर न्यू टैस्टामेंट क्रमैंटरी: मैथ्यू 1-7* (शिकागो: मूडी प्रैस, 1985), 87. [8]एच. लियो बोल्स, *ए. क्रमैंट्री ऑन द गॉस्पल अक्कॉर्डिंग टू मैथ्यू* (नैशविल्ले: गॉस्पल एडवोकेट कं., 1936), 96. [9]तेज़ भूख के दर्द से लोग कई बेतुकी बातें करते हैं। एक चौंकाने वाला और विचित्र उदाहरण सामरिया में घेराबन्दी से सम्बन्धित अकाल के दौरान अपने ही बच्चे को खा जाने का उदाहरण है (2 राजाओं 6:28, 29)। [10]लियोन मौरिस, *गॉस्पल अक्कॉर्डिंग टू मैथ्यू,* पिल्लर कमैंट्री (ग्रैंड रैपिड्स, मिशिगन: विलियम बी. ईर्डमैंस पब्लिशिंग कं., 1992), 74.

[11]रॉबर्ट एच. गुंडरी *मैथ्यू: ए क्रमैंटरी आन हिज़ लिटरेरी एंड थियोलॉजिकल आर्ट* (ग्रैंड रैपिड्स, मिशिगन: विलियम बी. ईर्डमैंस पब्लिशिंग कं., 1982), 56. [12]लुईस, 69. [13]जोसेफस *एंटिक्विटीस* 15.11.5. [14]*पेसिक्ता रब्बत्ती* 36; टवैल्फट्री, 823. [15]गुंडरी, 56. [16]विलियम हैंड्रिक्सन, *न्यू टैस्टामैंट क्रमैंट्री: एक्सपोज़िशन ऑफ़ द गॉस्पल अक्कॉर्डिंग टू मैथ्यू* (ग्रैंड रैपिड्स, मिशिगन: बेकर बुक हाउस, 1973), 230. [17]मौरिस, 76. [18]डोनल्ड ए. हैग्नर, *मैथ्यू 1-13,* वर्ड बिब्लिकल कमैंट्री, अंक 33ए (डलास: वर्ड बुक्स, 1993), 67. [19]एल्बर्ट बार्नस, *नोटस ऑन द न्यू टैस्टामैंट : मैथ्यू एंड मार्क,* सम्पा. रॉबर्ट फ्रयू (फिलाडेल्फिया: पृष्ठ नहीं, 1832; रिप्रिंट, ग्रैंड रैपिड्स, मिशिगन: बेकर बुक हाउस, 1974), 35. [20]जैक पी. लूईस ने लिखा, ''मनुष्यों की (प्रेरितों 10:26) और स्वर्गदूतों की (प्रकाशितवाक्य 19:10) उपासना की मनाही है; और शैतान की इससे कितनी अधिक मनाही होगी!'' (लूईस, 70.)

[21]मौरिस, 78. [22]गाई एन. वुडस, ''क्वेश्चंस एण्ड आंसर्स,'' *गॉस्पल एडवोकेट* (17 जून 1982): 358. [23]इस सारांश में दिए गए नाम जैक विलहेम, ''लैसन्स फ्रॉम द टैम्पटेशन ऑफ़ जीजस,'' RSVP *न्यूज़ लैटर* 154-10-83-37 (1983) से लिए गए। जैक विलहेम, पी. ओ. बॉक्स 2222, फ़्लोरेंस, अलाबामा 35630 से अनुमति लेकर छापा गया। [24]यीशु की परीक्षा के अन्य विवरण मरकुस 1:12, 13 और लूका 4:1-13 में दर्ज हैं। [25]बोल्स, 95. [26]हेयर, 26.